HINDI COURSE-B (085) CLASS-X

खण्ड - क

प्र०:-१

क) अज्ञान में जीवित रहना मृत्यु से अधिक कष्टकर है क्योंकि ज्ञान के प्रकाश से ही जीवन के रहस्य खुलते हैं और मनुष्य को उसकी पहचान मिलती है। शिक्षा मनुष्य यह ज्ञान देती है तथा मस्तिष्क और देह का उचित प्रयोग सिखाती है।

ख) शिक्षा के कई लाभ हैं, जैसे -

१. शिक्षा मनुष्य तथा समाज के विकास हेतु अनिवार्य है क्योंकि वह एक मनुष्य को उसकी पहचान के अलावा जीवन के अनेक रहस्यों से अवगत कराती है तथा कुछ गंभीर चिंतन भी देती है।

२. शिक्षा ही मनुष्य को मस्तिष्क और देह का उचित प्रयोग करना सिखाती है। शिक्षा एक मनुष्य को सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छा नागरिक भी बनाती है।

ग) अधिकारों और कर्तव्यों का पारस्परिक संबंध यह है कि एक शिक्षित व्यक्ति को अपने अधिकारों जितना ही अपने उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि एक मनुष्य अपने

उत्तरदायित्व निभाने और कर्तव्य करने के बाद ही अधिकार पाने का अधिकारी बनता है।

घ) शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि एक व्यक्ति के तौर पर ज्ञान के प्रकाश से ही जीवन के रहस्य खुलते हैं और एक व्यक्ति अपनी पहचान पाता है। एक समाज के लिए शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि वह मनुष्य को समाज हेतु सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छा नागरिक बनाती है तथा मनुष्य को आत्मिक ज्ञान देती है।

ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक "शिक्षा और उसके दायित्व" हो सकता है।

प्र०:-२

क) समुद्र में जातियाँ धोकर आने से कवि का यह तात्पर्य है कि सब भारत-वासियों अपनी अलग-अलग जातियाँ तथा अपनी प्रांतों की सीमाओं को भूलना होगा उन्हें हर तरह तथा हर स्थान से निकाल देना होगा

तथा बस इतना स्मरण रखना होगा होगा कि हम सब सिर्फ़ हिंदुस्तानी हैं। भले ही भारत देश ने हर जाति को अपनाया ठीक उसी प्रकार हम भी हर जाति भूलकर सिर्फ़ भारत को अपनाएँ।

प्र०:- 3

ख) 'बस एक ही मंदिर हो हमारा' से कवि का आशय है कि हर भारत के वासी को अपने अलग - अलग धर्मों को भुलाकर एक साथ एक ही धर्म के नीचे रहना होगा और वह धर्म होगा हिंदुस्तानी और इस एक धर्म का बस एक ही मंदिर हो और वह हो हमारी मातृभूमि, हमारा भारत देश। इस मंदिर की रक्षा हेतु हर हिंदुस्तानी सदैव तत्पर रहे।

ग) हमारी अलग - अलग पहचानें हैं क्योंकि हमारी मातृभूमि, हमारे देश ने हम संतानों बिना जाति - धर्म की पहचान किए पाला है और हमारी हर आवश्यकता को पूरा किया है।

हमारी अलग - अलग पहचानों को एक में समेटा जा सकता है और वह है हमारे हिंदुस्तानी धर्म में जिसका सिर्फ़ एक मंदिर होगा, यह पूर्ण देश जहाँ पर हर पहचान मिट जाएगी और याद रहेगी सिर्फ़ देशभक्ति।

खण्ड - ख

प्र०:- 3

शब्द के पद बनने पर यह परिवर्तन होता है कि उस शब्द की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है तथा वाक्य में प्रयुक्त होकर वह शब्द कोई-न-कोई प्रकार्य अवश्य करता है तथा उस शब्द में कोई-न-कोई रूप-साधक या शब्द-साधक अथवा शून्य प्रत्यय अवश्य लगता है।

उदाहरण -

'लड़का' एक शब्द है।
वाक्य में प्रयुक्त होते ही,

लड़का विद्यालय जाता है।

'लड़का' में ~~शून्य~~ शून्य प्रत्यय लग जाता है तथा यह संज्ञा का प्रकार्य कर रहा है और अब यह शब्द न रहकर पद बन गया है।

प्र०:-४

क) सूर्योदय होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।

ख) जब तताँरा तामीरो से मिला तब उसके जीवन में परिवर्तन आया।

घ) जब नींव कच्ची होती है तब मकान कमजोर रहता है।

प्र०:-५

(क)

(ii) मदांध - मद में अंधा (अधिकरण तत्पुरुष समास)

(iii) परोपकार - पर (दूसरों) पर उपकार (अधिकरण तत्पुरुष समास)

(ख)

(ii) कमल जैसे चरण - चरणकमल (कर्मधारय समास)

(iii) कन्या का दान - कन्यादान (संबंध तत्पुरुष समास)

प्र०:-६

क)

ग)

घ)

ङ)

प्र०:-७

क)

ख)

प्र०:-६

क) भाई साहब फ़ेल और मैं पास हो गया।

ग) आप जब मिलने आएँ तब फ़ोन कर लीजिएगा।

घ) हमने तो घर पहुँचते ही सारी बात बता दी थी।

ङ) लड़कों को समझाएँगे तो वे मान जाएँगे।

प्र०:-७

क) वे हर बात में टाँग अड़ाते हैं।

ख) भारतीय सैनिकों ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए।

खण्ड - ग

प्र०:- ८

क) छोटे भाई को बड़े भाई की बातों से लघुता का अनुभव तब हुआ जब उनके बड़े भाई ने उन्हें बताया कि भले ही वह बड़े भाईसाहब के समकक्ष क्यों न आ जाए परंतु अनुभव ज्ञान में वह उनसे सदैव छोटा रहेगा और किताबी ~~ध्य~~ ज्ञान से सर्वोपरि अनुभव ज्ञान है। छोटे भाई को इस बात से लघुता का अनुभव इसलिए हुआ क्योंकि वह समझ गए कि उनका किताबी ज्ञान उन्हें उनके पिताजी जितना अनुभवी नहीं बना सकता ठीक इसी प्रकार वह अनुभव में अपने बड़े भाईसाहब से छोटा ही रहेगा।

ख) सुभाष बाबू के जुलूस ~~२~~ में स्त्री समाज की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका थी क्योंकि मोनुमेंट के नीचे स्त्री समाज ने ही झंडा फ़हराकर शपथ ~~प्र~~ पढ़ी तथा लाठी पड़ने पर ~~पर~~ भी अपने स्थान पर अडिग रहीं। उनको गिरफ़्तारी का भय नहीं था न ही लाठी की मार का। उनको बस भारत के आंदोलन को आगे बढ़ाना था। इस आंदोलन में १०५ स्त्रियाँ गिरफ़्तार हुई तथा लक्ष्य प्राप्त होने के बाद वे धर्मतल्ले के मोड़ पर जुलूस तोड़कर बैठ गईं। इस प्रकार सुभाष बाबू की गिरफ़्तारी के बाद स्त्री समाज ने हर जिम्मेदारी को अपने कंधों पर उठाकर आंदोलन को सफल बनाया।

ग) लेखक रवींद्र केलेकर ने स्पर्श के पाठ 'झेन की देन' में वर्तमान को ही सत्य माना है। भूत, भविष्य और वर्तमान में वर्तमान को सत्य माना गया है क्योंकि भूत बीत चुका है तथा भविष्य किसी ने देखा नहीं अर्थात मनुष्य वर्तमान में ही जीता है तथा वही सत्य है।

प्र०:- ६

हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पाठ 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' के लेखक रवींद्र केलेकर के अनुसार शुद्ध सोना, शुद्ध आदर्शों की तरह होता है जिसमें किसी भी प्रकार की मिलावट नहीं की जाती है। वहीं दूसरी तरफ़ गिन्नी का सोना, शुद्ध सोने में मिलाया हुआ तांबा होता है जिस प्रकार शुद्ध आदर्शों में थोड़ी-सी व्यवहारिकता मिलाकर 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' बनते हैं। इस प्रसंग में महात्मा गांधी की चर्चा द्वारा लेखक पाठक को यह बताना चाहते हैं कि वे व्यवहारिकता को शुद्ध आदर्शों के स्तर पर लाते थे जैसे कि वे सोने में तांबा नहीं अपितु तांबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। इसी कारण वे देश को आज़ाद करवा पाए अन्यथा हवा में ही उड़ते रहते। अके सत्याग्रह आंदोलन इसी बात का सबूत है कि वे पूर्ण देश का उत्थान

करना चाहते थे बिना स्वयं के लाभ के बारे में सोचे जो वह सिर्फ़ व्यवहारिकता की सहायता से कर पाए। इस संसार में व्यवहारवादी लोग सफ़लता प्राप्त करते हैं तथा ऊपर सिर्फ़ स्वयं उठते हैं परंतु आदर्शवादी सबको साथ लेकर ऊपर उठते हैं तथा लोक-कल्याण व समाज कल्याण को समर्पित होते हैं।

प्र0:-10

क) कबीर ने सदैव मीठी वाणी बोलने की सलाह दी है क्योंकि मीठी वाणी बोलने के अनेक लाभ होते हैं जैसे कि बोलने व सुनने वाले को सुख व आनंद की प्राप्ति होती है तथा मीठी वाणी बोलने वाले का तन भी सकारात्मकता व शीतलता प्राप्त करता है।

ख) 'मनुष्यता' कविता में उदार व्यक्ति की यही पहचान बताई गई है कि उसकी सदा सुमृत्यु होती है, वह सबका हितैषी होता है, उसका बखान सरस्वती किताबों के रूप में करती है तथा धरती भी उनसे कृतार्थ भाव मानती है। इन व्यक्तियों के लिए कविता में आदर, सहानुभूति, दया, सत्यवादिता, बलिदानी आदि भाव व्यक्त किए गए हैं।

ग) 'आत्मत्राण' कविता में कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ~~के~~ सहायक के न मिलने पर ईश्वर से बस इतनी प्रार्थना करते हैं कि उनका आत्मबल तथा पुरुषत्व कदापि न हिले और वे उस अवस्था में भी अडिग व अचल रहें।

उ०:-११

हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पाठ 'पर्वत प्रदेश में पावस' में कवि सुमित्रानंदन पंत ने पर्वतीय प्रदेश में वर्षा का अत्यंत सुंदर व मनमोहक चित्रण करते हुए कहा है कि वर्षा ऋतु में पर्वत प्रदेश में प्रकृति पल-पल अपना वेष बदल रही थी, कभी तेज़ वर्षा तो कभी तेज़ धूप हो जा रही थी। इन सब के बीच अनेक मेखलाकार पहाड़ों से बहता हुआ जल उनके चरणों में दर्पण रूपी तालाब बना दे रहा था जहाँ से सहस्त्र सुमन ऐसे प्रतीत हो रहे थे कि पर्वतों के नेत्र बनकर वे उस दर्पण में स्वयं का प्रतिबिंब देख रहे हैं। उन पर्वतों से बहते हुए झरने मोती की लड़ियों से प्रतीत हो रहे थे। साथ ही चारों तरफ़ बिजली पारे की तरह अपने पर फैला रही थी। पर्वतों पर उपस्थित वृक्ष ऊँची महत्वकांक्षाओं को दिखा रहे थे तथा कई शाल के वृक्ष मिट्टी में धँसने के भय से

है।

उसमें धँस चुके थे। चारों तरफ़ बरसते जल के कारण जो धुआँ उठ रहा था उससे ऐसा लग रहा था मानो पर्वत प्रदेश जल रहा है। चारों तरफ़ के सन्नाटे में सिर्फ़ बहते हुए झरनों की आवाज़ ही शेष रह गई थी। इस प्रकार ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इंद्र देव अपनी सवारी पर विचर-विचर जादुई खेल दिखा रहे हों।

प्र०:- १२

"अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की अच्छी समझ रखते हैं" हमारी पूरक पुस्तक 'संचयन' के पाठ "हरिहर काका" में लेखक मिथिलेश्वर ने उपर्युक्त पंक्तियों को बखूबी दर्शाया है। हरिहर काका के पास पंद्रह बीघे ज़मीन थी। उस ज़मीन पर ठाकुरबारी के महंत जी तथा उनके तीन भाईयों की बराबर नज़र थी। उन दोनों की तरफ़ से हरिहर काका को ज़मीन उनके नाम करने का प्रस्ताव कई बार आया परंतु उन्होंने उसे कदापि नहीं स्वीकारा क्योंकि अनपढ़ होते हुए भी उन्हें अनुभव ज्ञान बखूबी था। वे जानते थे कि अगर उन्होंने अपनी ज़मीन किसी के भी नाम की तो उसके बाद वे उन्हें पूछना बंद कर देंगे। उन्होंने इसका प्रत्यक्ष उदाहरण अपने गाँव में ही रमेसर की विधवा के साथ भी देखा था जिनके

पुत्रों ने उनसे ज़मीन अपने नाम करवाने के बाद उन्हें दूध की मक्खी की भाँति निकाल फेंका था। इसी कारण दोनो पक्षों द्वारा पिटने के बाद भी उन्होंने अपनी ज़मीन किसी के नाम नहीं की। यह दर्शाता है कि एक अनपढ़ व्यक्ति भी समाज में होते नकारात्मक बदलावों को अपने अनुभव द्वारा समझ सकता है तथा समाज की कुनीतियों से भी बचा रह सकता है। यही कारण है कि हरिहर काका ने अपने जीते जी कितने ही दबाव के बावजूद किसी के नाम नहीं की क्योंकि उन्हें अपने अनुभव ज्ञान से दुनिया की अच्छी समझ हो चुकी थी जिस कारण वह अचरज में भी थे तथा असमंजस में भी कि समाज किस ओर जा रहा है।

खण्ड - घ

Q. १२

अनुच्छेद लेखन -

स)

(कृपया पृष्ठ उलटें)

समय का सदुपयोग

समय बहुत ही मूल्यवान वस्तु है और समय किसी के लिए नहीं रुकता। जो वक्त रहते समय का सदुपयोग नहीं करता। वह जीवन में सदैव पछताता है। समय का सदुपयोग करने वाला इंसान जीवन में सदा उन्नति करता है। समय का सदुपयोग कई प्रकार से किया जा सकता है वक्त रहते अपना कार्य पूर्ण करके, मोबाइल, टी॰वी॰ में समय व्यर्थ न करके। एक मनुष्य का धर्म उसका कर्म होता है जिसको उसे समय के अंतर्गत ही करना होता है। मनुष्य अगर अपना ध्यान सिर्फ़ कर्म पर केंद्रित करता है तो वह समय का सदुपयोग करता है। समय के दुरुपयोग के भी अनेक खतरे हैं जैसे- समय के दुरुपयोग से मनुष्य का पूर्ण जीवन समाप्त हो सकता है, मनुष्य के स्वास्थ्य को भी इससे बहुत बड़ा खतरा है जैसे अधिक समय मोबाईल पर व्यतीत करने से और अपना कार्य पूर्ण न करने से मनुष्य की आँखों को नुकसान पहुँचता है, एक समय-सारिणी का पालन न करके मनुष्य अपना कोई भी कार्य समय पर खत्म नहीं कर पाता और असफ़लता प्राप्त करता है। जो समय का आदर व सदुपयोग करता है वह जीवन नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता है।

प्र०:-१४

प्र०-१४ औपचारिक पत्र लेखन -

परीक्षा भवन
अ०ब०स० विद्यालय
क०ख०ग० नगर

१६ मार्च, २०१९

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम
क०ख० ग० नगर

विषय - बस्ती में आवारा कुत्तों समस्या के निवारण हेतु पत्र।

मान्यवर,
मैं क०ख०ग० नगर की च०छ० ज० बस्ती का निवासी हूँ तथा आवारा कुत्तों के कारण हो रही समस्याओं से आपको अवगत करना चाहता हूँ।
हमारी बस्ती में आए दिन कोई-न-कोई व्यक्ति आवारा कुत्तों का शिकार हो रहा है तथा उन्होंने हमारी बस्ती की एक बच्ची की काटकर हत्या भी कर दी है। वे हर रोज हमारी बस्ती में कूड़ा फैला देते हैं तथा उनका मल-मूत्र नई बीमारियों का कारण बन रहा है।

अतः मेरा आपसे यह अनुरोध है कि जल्द-से-जल्द इन आवारा कुत्तों हेतु नए आवास ~~हेतु~~ का कार्य आरंभ किया जाए तथा इनसे प्रभावित लोगों को चिकित्सा हेतु धन-राशि प्रदान की जाए।

सधन्यवाद।
भवदीय,
ट०ठ०ड

प्र०:-१५

<u>सूचना लेखन</u>

⟶

सूचना
अ० ब० स० विद्यालय
क० ख० ग० नगर

१६ मार्च, २०१९

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि विद्यालय "वार्षिकोत्सव - २०१९" मनाएगा जिसकी जानकारी निम्नलिखित है -
तिथि - ३१ मार्च, २०१९
समय - प्रातः ८ बजे से सायं ६ बजे तक
स्थान - खेल मैदान, अ० ब० स० विद्यालय, क० ख० ग० नगर
इस कार्यक्रम में नृत्य, संगीत, कला आदि कलाओं में भाग लेने हेतु इच्छुक छात्र अपना नाम खेल मैदान में सचिव को लिखवाएँ।
ट० ठ० ड
सचिव
छात्र कल्याण - परिषद्

प्र०:-१६

संवाद लेखन –

मित्र 1- राम   मित्र 2- रमेश

राम - अरे! रमेश तुम भी यह चलचित्र देखने यहाँ आए थे? अगर मुझे बताते तो हम साथ चलते।

रमेश - प्रणाम मित्र। मुझे नहीं पता था कि तुम्हें चलचित्रों में रुचि है, मैं तो तुम्हें किताबी कीड़ा समझता था।

राम - नहीं मित्र, ऐसा नहीं है। मैं वे चलचित्र अवश्य देखता हूँ जो समाज को एक अच्छा संदेश देते हैं। इन चलचित्रों से मैं और लोगों को भी अवगत करता हूँ।

रमेश - यह तो अद्भुत बात है। मैं इस चलचित्र को दूसरी बार देख रहा हूँ। मैं जब भी इस चलचित्र को देखता हूँ तो मेरे अंदर देश के लिए कुछ करने की भावना जाग जाती है।

राम - यह तो अच्छी बात है। वैसे इस चलचित्र में दहेज प्रथा के बारे में बताया गया है। क्या तुम इस प्रथा में विश्वास रखते हो?

रमेश - बिल्कुल नहीं मित्र। एक बेटी ही उसके माता-पिता का दिया सबसे बड़ा दहेज होती है, उससे अधिक किसी इंसान को क्या चाहिए?

राम - बिल्कुल उचित कहा मित्र परंतु मुझे अफ़सोस इस बात का है कि समाज में इसका प्रचलन आज भी है।

रमेश - मित्र, कई बार तो मैं यह सोचता हूँ कि इन चलचित्रों का मकसद तब तक अधूरा रहेगा जब तक समाज इससे बदलाव नहीं आएगा।

राम - चलो मित्र, अब हम ही यह पहल करेंगे तथा कल से और छात्रों सहित अध्यापिका की आज्ञा लेकर सबको अवगत करने चलेंगे और शुरुआत करेंगे अपनी बस्ती से।

रमेश - बिल्कुल ठीक कहा। तो मित्र अब कल मिलते हैं
हम एक नए उत्साह तथा नई उमंग से। शुभ रात्रि।

प्र०:-१७

विज्ञापन लेखन —

पुराने मकान में नए का मज़ा !!

यह आलीशान मकान अब बहुत कम दाम में सिर्फ - 50 लाख

पहले आएँ पहले पाएँ

होली के अवसर पर भारी छूट

पुरानी सड़क, अ०न०स० नगर के पास

7 कमरे 2 शौचालयों तथा 3 पाकालय (किचन) वाला घर सिर्फ यहाँ

शहर में अपना घर हो तो शहर भी अपना लगता है।

अब अपनी होली नए घर में !!   मो० - 9860534590